>

Title: Need to take over the historical Bharhut stupa in Satna Madhya Pradesh by Archeological Survey of India.

श्री गणेश सिंह (सतना): मैं भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का ध्यान मध्य प्रदेश के सतना जिले में भरहूत स्तूप जो प्रख्यात बौद्ध स्मारक एवं कला का भव्य नमूना है तथा भारत की सामाजिक संस्कृति का सुन्दर परिचायक है, उस ओर दिलाना चाहता हूं। ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक द्वारा उस स्तूप की स्थापना की गयी थी। वह ऐसा ही स्थान है जैसे उत्तर प्रदेश में कौशाम्बी, इलाहाबाद, पैठण (महाराष्ट्र), बिहार में पाटलिपुत्र तथा राजगीर है। यह अपनी संपूर्ण भव्यता के साथ गगनचुम्बी स्तूप के रूप में खड़ा था जो उस समय के मध्य भारतीय वाणिज्यिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का जीवन्त साक्षी था। मौर्य वंश, शुंग वंश तथा गुप्त साम्राज्य के समय से आठवीं शताब्दी तक इसकी अग्रगामी गतिविधियां रही हैं। 1873 ई. में पुरातत्व अन्वेषक अलेक्जेंडर के लोग वहां गए थे और संपूर्ण अवशेषों को कलकत्ता भेज दिया था। अतः स्तूप खण्डहर में तब्दील हो गया। उसके जो दुर्लभ चित्र थे उससे उस समय की संस्कृति एवं परंपराओं का जीवन्त मिश्रण था। वह कलकत्ता के अलावा यहां-वहां बिखरे पड़े हुए हैं। कुछ मूर्तियां इतनी कीमती थी कि लोगों ने उसे विदेशी बाजार में करोड़ों रुपए में बेच दिया। मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि भरहूत स्तूप का पुरातत्व विभाग अपने नियंत्रण में लेकर उसको सुरक्षित करते हुए वहां स्मारक एवं म्यूजियम बना कर जो अवशेष कलकत्ता में रखे हुए हैं, उन्हें वापस सतना जिले में लाया जाए ताकि उसके ऐतिहासिक केन्द्र को लोग समझ सकें तथा नयी खोज कर सकें। वैसे भी मेरा लोकसभा क्षेत्र सतना धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। चित्रकूट, मैहर, रामवन, वृषिणपुर, धारकुंडी, मार्कण्डेय घाट, बांधवगढ़, अमरकंटक, भरहूत, देवकुठार जैसे क्षेत्र हैं जिनका पर्यटन की दृष्टि से विकास होना अत्यंत आवश्यक है। मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि वह इन क्षेत्रों का सर्वेक्षण कराकर इसको टूरिस्ट सर्किट में भी शामिल करे और पुरातत्व विभाग से यह मांग करता हूं कि ऐसे स्थानों का संरक्षण के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध कराएं।